

18 February 2021

## ऑनलाइन तीन दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ

कानपुर। उत्प्रवाह (एफ्लूएंट) शोधन इकाई का संचालन एवं उत्प्रवाह के विश्लेषण के लिए मानक प्रोटोकाल विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम केन्द्रीय प्रदूषण



वेबिनार में शामिल प्रोफेसर व अधिकारी।

नियंत्रण बोर्ड की ओर से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आयोजित किया गया। जिसमें विभिन्न राज्यों के प्रदूषण बोर्ड अधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशिक्षु अधिकारियों को मानक उत्प्रवाह (एफ्लूएंट) संचालन प्रक्रिया के संदर्भ में जानकारी देने के साथ साथ उन नवीन तकनीकों के बारे में भी जागरूक करना है जिन्हें भविष्य में शर्करा उद्योग के द्वारा अपनाया जाना है। संस्थान के प्रो. डीन स्वेन और डा. आशुतोष बाजपेयी ने भी इस अवसर पर चीनी कारखानों के द्वारा जल प्रबंधन और विभिन्न प्रकार के चीनी के उत्पादन और उनकी गुणवत्ता के बारे में बताया।

कानपुर

18 फरवरी 2021

4

## एनएसआई में उत्प्रवाह पर प्रशिक्षण

कानपुर, 17 फरवरी। उत्प्रवाह (एफ्लूएंट) शोधन इकाई का संचालन एवं उत्प्रवाह के विश्लेषण के लिये मानक प्रोटोकाल विषय पर आनलाइन प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ आज किया गया। केन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड की ओर से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में आयोजित संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने इस विषय पर वर्तमान परिदृश्य को सभी के सामने रखा। उन्होंने कहा कि उत्पादन



वेबिनार में शामिल निदेशक व अन्य।

इकाइयों में सर्वोत्तम उपलब्ध तकनीक (बीएटी) को अपनाने में जोर दिया जाना चाहिये। इनको अपनाने से सभी को लाभ होगा। उन्होंने स्प्रे ड्राइ तकनीक पर भी प्रकाश डाला। मेसर्स त्रिवेणी इंजीनियरिंग एंड इंडस्ट्रीयल लि के तरुण साहनी ने सत्र का शुभारंभ करते हुये शर्करा उद्योग को नयी कम लागत वाली तकनीक के विकास का आह्वान किया, ताकि मानक के अनुरूप रहते हुये उपयोग में आ सके। ईथनाल इंडस्ट्रीज को लेकर भी उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये। संस्थान के प्रो.डी स्वेन तथा आशुतोष बाजपेयी ने भी इस विषय पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन जैव रसायन विभाग की आचार्या डा.सीमा परोहा तथा आचार्य अनूप कुमार कनौजिया द्वारा किया गया।

# NSI imparting training on effluent treatment

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

The three-day online training on operation of effluent treatment plants and analysis of effluents as per standard protocols commenced here on Wednesday.

The training programme has been organised by the National Sugar Institute on behalf of the Central Pollution Control Board and is being attended by officers of various State Pollution Control Boards. This training programme is aimed at educating these officials on Standard Operating Procedures and making them aware of the newer technologies developed for adoption in future.

Addressing the training programme Triveni Engineering and Industries Ltd, Managing Director Tarun Sawhney called upon the industry to explore possibilities of developing innovative, low cost, indigenous technologies for their implementation to achieve lower fresh water requirements besides ensuring discharges as per Pollution Control Board norms.

He said ethanol production was being taken up in a big way to meet the requirements and it was expected that investments to the extent of about Rs 50,000 crore shall be made in the near future. He said this would call for manpower well versed with environmental issues and adop-

tion of innovative technology. He said the Indian sugar industry could set benchmarks for the sugar industry across the globe.

National Sugar Institute Director Prof Narendra Mohan made an elaborate presentation on the current scenario of effluent management in sugar factories and distilleries and emphasised upon the adoption of the best available technologies in the units.

He said while sugar factories could provide surplus water to society after due treatment, the molasses-based distilleries could help in producing potash rich fertiliser and bricks etc. out of the ash obtained from the boilers.

He also presented details of spray drying technique for converting spent wash (effluent) from distilleries into potash rich powder.

"By adopting such techniques, while on the one hand we can meet the requirements of Pollution Control Boards, on the other, value-added products can be obtained out of the waste," he said.

Prof D Swain and Dr Ashutosh Bajpai of the institute also made presentations on the subjects related to water management in sugar factories and production of different sugar qualities, respectively. Both said water and effluent management was to be made as per the quality of sugar produced because of process change.

## बॉयलर की राख से बना सकते हैं ईंट

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में उत्प्रवाह शोधन इकाई संचालन एवं उत्प्रवाह के विश्लेषण के लिए मानक प्रोटोकॉल विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण बुधवार से शुरू हो गया है।

एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि शर्करा उद्योग एवं डिस्टलरियों की उत्पादन इकाइयों के उत्प्रवाह को शोधित करके उस जल का दोबारा उपयोग किया जा सकता है। स्पेंट वॉश को सुखाकर पोटाश और बॉयलर की राख से ईंट बनाई जा सकती है।

एनएसआई में उत्प्रवाह शोधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण की शुरुआत

प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ मेसर्स त्रिवेणी इंजीनियरिंग एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक तरुण साहनी ने किया। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी हिस्सा ले रहे हैं। एनएसआई के प्रोफेसर डी स्वेन और डॉ. आशुतोष वाजपेयी ने चीनी कारखानों में जल प्रबंधन, चीनी उत्पादन और उनकी गुणवत्ता के बारे में बताया।